



Hargharpanditji

॥ श्री बजरंग बाण ॥
राम भक्त हनुमान जी की जय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री बजरंग बाण ॥

दोहा

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करें सनमान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करें हनुमान॥

चौपाई

जय हनुमंत संत हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

जन के काज विलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

जैसे कूदि सिंधु महि पारा।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥

आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुरलोका॥

जाय विभीषण को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परम पद लीन्हा॥

बाग उजारि सिंधु महँ बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥

अक्षय कुमार मारि संहारा।
लूम लपेटि लंक को जारा॥

लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर महँ भई॥

अब विलंब केहि कारण स्वामी।
कृपा करहु उर अंतर्यामी॥

जय जय लक्ष्मण प्राण के दाता।
आतुर होइ दुख करहु निपाता॥

जय गिरिधर जय जय सुखसागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥

ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरीहिं मारु बज्र की कीले॥

गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥

ॐकार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलंब न लावो॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥

जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकर सुवन वीर हनुमंता॥

बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर।
अग्नि बेताल काल मारीमर॥

मारु तोहि शपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की॥

सत्य होहु हरि शपथ पाई के।
रामदूत धरु मारु धाई के॥

जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुख पावत जन केहि अपराधा॥

पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत कछु दास तुम्हारा॥

वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

पाय परौं कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकर सुवन वीर हनुमंता॥

बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

भूत प्रेत पिशाच निशाचर।
अग्नि बेताल काल मारीमर॥

इन्हें मारु तोहि शपथ राम की।
राखु नाथ मरजाद नाम की॥

जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ विलंब न लावो॥

जय जय जय धुनि होत अकाशा।
सुमिरत होत दुसह दुख नाशा॥

चरण शरण कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पाय परौं कर जोरि मनाई॥

ॐ चं चं चं चपल चलंता।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंता॥

ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥

अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥

यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कौन उबारै॥

पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करें प्राण की॥

यह बजरंग बाण जो जापै।
तासों भूत-प्रेत सब काँपै॥

धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहि रहै कलेशा॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करै हनुमान॥

॥ श्री बजरंग बाण सम्पूर्ण ॥

